

ॐ गं अनन्तासनाय नमः ॥ ॐ गं कदासनाय नमः ॥ ॐ गं नालासना
य नमः ॥ ॐ गं यथासनाय नमः ॥ ॐ गं कननासनाय नमः ॥ ॐ गं क
र्तिकासनाय नमः ॥ ॐ गं यद्वासनाय नमः ॥ ॐ गं महासूत्रासना
यमादुर्कायूज्याय नमः ॥ ॥ नद्यपनिवर्तुं विरुद्धाद्यद्यपि भि
यत् ॥ नवनक्षत्रमयं दीर्घं सप्तदिक्कृतसाम्बुधौ ॥ नदीविश्रोगयथ
नैः मन्दमानुषसन्निभं ॥ मन्दानयानिजागादि कल्पवृक्षलगाकूली ॥

सप्तमं शतकं

ARCHIVE

1.170

उद्गुगनत्र का यारि, ननू लीकनरुतलै। उद्गुदिनकनन्दुखा, मृदुः
 सिगदिगनकर्न॥ गस्यमध्यानिजार्त, नवननमयसमन॥ मनुः
 रिः सविनवदि, ननिर्नवीगिवर्द्धने॥ गस्याध्रकान्महायी, न
 विगमाहका मृदु। यद्वाधनकमिकाधरु, विगयनगधनायकं १०
 ॥ रुक्यादि, तदागाने, सूर्यकाटिसमप्ररं। ध्यावद्गजानने दर्वन
 ककाकेन सन्निरं॥ यद्गुर्गुर्गुमहाकार्य, सर्वोहनधरुविगं। दन्ता

[illegible]

संज्ञांस्तुं (संज्ञांस्तुं) श्रीगणेशाय नमः ॥ कृष्णनादिभक्ति सहिताय वा
पू॥ ॥ दादमा (नमः पूजने) ॥ उं गं ग (गणेशाय वा दादाया वा) ॥ उं गं
विघ्ननाशाय जानूयात् ॥ उं गिं विमलालादाय उन्मूयात् ॥ उं
गोहनमाय कटीयां वा ॥ उं गं लभादनाय उदने ॥ उं गं काम ॥
नूयधनाय रुदये ॥ उं गं यनय कधनाय रुद्राया ॥ उं गं वृ
हवक्राय मूर्ख ॥ उं गं गजकर्णाय कर्णाय ॥ उं गं मूर्खक

वाहनाय ललाट ॥ उं गं बालेन्द्रभक्तलाय मोलो ॥ उं गं सर्वसि
द्धिप्रदायकाय सर्वगया ॥ ॥ उं गं (नमः पूजने) ॥ उं गं रुद्राय
या ॥ उं गिं नमः या ॥ उं गिं निखाये या ॥ उं गं कवचाय या ॥ उं गं
भयप्रयाय या ॥ उं गं अस्त्राय या ॥ ॥ अथ नवविंशतियुग्मसमर्प
णं ॥ उं गं गणेशाय नमः ॥ ललाटीययुग्मसमर्पणं ॥ उं गं चक्रद
नाय रुद्रगनाय युग्म ॥ उं गं मूर्खाय विलययुग्म ॥ उं गं कविलाय

इक्ष्वाकुर्मै॥॥ॐ गं गजकर्णाय वदनीयं॥ॐ गं उमायूपाय धूसर
 त्रयं॥ॐ गं विशालाक्षाय पुनरीपुं॥ॐ गं मूरकवाहनायः
 अयामार्जयं॥ॐ गं सुनयकाय वरुणीयं॥ॐ गं कामनकर्ण
 यगमीयं॥ॐ गं कामननूपाय कनवीनयं॥ॐ गं लम्बादना १२
 यज्जलकृपुं॥ॐ गं विष्णुनाय अर्कयं॥ॐ गं अघनाभाय
 अर्कनयं॥ॐ गं विष्णुनाकाय विष्णुकान्तायं॥ॐ गं सुमखा

३॥ ॥ श्रीमानका॥॥ॐ गं विष्णुर्लयादावधीसहिनाय ३॥ ॥
 वक्राक्षदक्षाय॥ॐ गं नखनिधयवसुन्धनासहिनाय ३॥ ॥
 वक्राक्षवामया॥ॐ गं यज्ञनिधयवसुमनीसहिनाय ३॥ ॥ अ
 थ कदलपू॥ॐ गं अं अं असिना अरेनवाय अं अं नूं नूं उं उं नं नं
 नं नं उं उं अं अं अं अं वक्राक्षीसहिनाय ३॥ॐ गं नूं नूं वक्रुरेनवाय
 कं वं गं चं दं कूं ३॥ कोमानीसहिनाय ३॥ॐ गं उं उं उं नं नं नं नं

लीसप्तशतिकाय ३

ॐ उं मूं नूं वां नाही सहि माय ३॥ उं गं मं कूं का धले नवा यटं ॐ उं टं
हं दूं वेमू वूं बी सहि माय ३॥ उं गं ॐ हं क पा ल रे नवा यम थं दं धनं
गूं ॐ ॐ डा हो सहि माय ३॥ उं गं नूं नूं ये रूं वं रूं सें मूं वामू धु सहि मा
य ३॥ उं गं उं उं नूं नूं रे नवा य रं ने लं वं यू मा हूं श्वना सहि माय १४
३॥ उं गं अं अं ४ सं हा न रे नवा य मं मं सें ॐ हं दं मूं महा ल को स
हि माय ३॥ ॥ रु वि म्ब दा न यू ॥ उं गं लां लां लें लें ॐ लें लें ४ लूं ॐ

[illegible]

सनाय वा मरुताय नागधियनय भक्ति सहिताय ३॥ उं गं यों यों यू
यों यों य ॥ यूर्वा वायूव हनिष्ठा सनाय ध्वज रुक्ता अक नि काधियन
य भक्ति सहिताय ३॥ उं गं सों सों सों सों सों सों ॥ कृव नाय हया
सनाय गदा हस्ताय धनाधियनय भक्ति सहिताय ३॥ उं गं हों १०
हों हों हों हों ॥ पूर्वा न्नी मनाय दृषा सनाय पिशू ल हस्ताय रुक्ता
धियनय ना ॥ उं गं कि सहिताय ३॥ ॥ पूर्व न्नी मानसार्म (ध्या) उं

कं ॥ उं गं लक्ष्म्य नाय भाउकं ॥ उं गं दिप्रय सादकाय भाउकं ॥ उं
गं अमाय सिद्धय भाउकं ॥ उं गं अमाय भाउकं ॥ उं गं निर्याय
भाउकं ॥ उं गं विन्ना मधय भाउकं ॥ उं गं निधय भाउकं ॥ उं गं
रूप गलाय भाउकं ॥ उं गं वीजाय भाउकं ॥ उं गं आभायूनकाय भा
उकं ॥ उं गं वनदाय भाउकं ॥ उं गं मिवाय भाउकं ॥ उं गं काश्याय
भाउकं ॥ उं गं नन्दनाय भाउकं ॥ उं गं वायसिद्धय भाउकं ॥

ॐ गं शो विनायकाय भाउ के समर्थ या मि नमः ॥ ॥ भाउ का न्युः
जिह्वानु, घृणा का न्युल संयुगात् । दव दवन मसुख्ये, यत्रियू
उमं कनू ॥ ॥ ॐ दं रुले मया दव ह्मा पिर्न पून गस्तव । न न म स रु
सा वा कि, रु ऊ ऊ न नि ज न नि ॥ दिन ध ग र्ग र्ग ह्म रु म वी ऊ वि रा
व सा । अ न क यू ध रु ल दं, गृ हा ष ग ध ना य क ॥ ॥ न म स्का र्त्त ॥ न म
रु वि घ्ना जाय, न म रु क न रा न ना । न म रु मि नि जा यू प्र, म ना न थ रु

ल प्र द ॥ न म रु ना मि वि घ्ना, सर्व वि घ्ना रु वा । नी घ्ना म म व र्ने द हि
न म रु रु क व त्स ल ॥ ॥ म धु ल ॥ जाय १०८ ॥ ॐ ॥ ॐ न म ४ श्री ग (६)
भा य ॥ यं ब्र ह्म व दान्क वि द्य व द कि, य र्ने प्र ध र्ने पू नू र्ध ग थ न्ने । वि श्व
इ न क्का न ष मि श्व न म्मा, न स्रे न मा वि घ्ना वि नाय का य ॥ य स्या र्त्त न न वि
धि ना वि ग यी रु ला क, क र्म ४ प्र सि द्ध मि नि ना रु रु ले प्र सू ग, न स न र्ग स
क ल सा ध क वि रु व रु, वि का म र्दि कू ल ग ध धि य र्नि न मा नि ॥ प्र क द

नमो महाकायं, गणकायं नमो नित्यं नमो दत्तं विसालादं, वन्दे हं गणना
यकं ॥ अम्बिका दद्यानन्दं, मातु वियन वस्तिगं। लक्ष्मि रीस दानन्दं
वन्दे हं गणनायकं ॥ विग्रन त्त विविगर्गं विग्रमाल विह्वषर्षा का
मनूय धनं दर्व, वन्दे हं गणमायकं ॥ यदु किन्न नग धर्व, सिद्ध विद्या १८
धने रुथा। सूर्यमानं महा वादं, वन्दे हं गणनायकं ॥ मोडि रुषूडे
नधने नागय ह्वाय वीतिनं। वालन्दू सकला मोलिनं, वन्दे हं गणनाय

कं ॥ मूषग मगु ४ समानू अदवा सून महारुव। यादू कायं महा वीर्यं व
न्दे हं गणनायकं ॥ नमस्कृता मि विघ्नं, सर्व विघ्नं हं नारुव। मोर्षी मम
वने दहि, नमस्कृता कवत्सन ॥ विनायक नमस्यु र्गं सगर्गं अधक वि
या। अविघ्नं कून्मदव सर्व कार्यं पू सर्वदा ॥ मनुही नर्यादि ॥ अग्रग
ध्यादि ॥ यगु नर्यदी ॥ वृक्ष क्लृप्तय ॥ यीग युगादि नर्यदी ॥ उर्ध्व वृक्षा यु
भावाद्यादि ॥ ॥ खानका काय ॥ नमस्कृ विघ्नना जाय, नमस्कृ कनः

लाननानमस्तुगिनिजायुष, मन्नानथरुलप्रद॥ नमस्तुनामिनिधि
 म, सर्वविघ्नहन्नायव। श्रीघ्नमसवर्नदहि, नमस्तुहकवत्सन॥ ॥
 स्नाननिनय॥ विनायकनमस्तुर्थ, सगर्गमादकधिया। अविघ्नकृन्
 मदव, सर्वकार्यसुसर्वदा॥ गद्यमः प्रनिगृह्णाति, गद्यमः वेददा २०
 विद्या। गद्यमस्तानकासाया, गद्यमयनमानमः॥ ॥ पूर्वव
 न्यासकला॥ संहारमूढी॥ गद्यमः सर्वसुखस्तानगतान

दीयन्नुदप्रियायति, नैवर्षीविघ्ननामिन। गतादूर्वीकृन्गृह्णाति, विम
 तिचैकभवव॥ पूजनीयः प्रयत्नन, परिनीमयदेष्टुथका। गद्यमः
 धियनमस्तु, उमापूजायनोमन॥ विनायकनमस्तुर्थ, सर्वसिद्धि
 प्रदायकः। प्रकदनेरुवकृति, गद्यमस्तुयकवाहन॥ कुमारगुप्त
 वरुण, पूजनीयः प्रयत्नगः। दूर्वायुर्मगृहीत्यायु, गन्धयूकं प्रयु
 जयन्॥ प्रककननुनामावे, पूजनीयागद्यमधियः। गदेकविमः

मिगृह्णन्मादकाद्यतयाचिकी॥ स्थाययित्वागदधकात्समीयकल
 नन्दन। दमविषायदागवी, स्वयंवाद्यालुधमम॥ प्रकंगदधधिय
 दद्यात्सर्गैवर्धनं धारुमा। विनायकस्य पुमिमा, वाक्कदधयनिवद
 यगू॥ प्रवर्गसंपूज्यविधुमी, दमयायवविसर्जयगू। वाक्कदधैराजय २३
 स्यगू, दुर्जीयालेलवर्जित॥ कृतानेमिलिकंकर्म, पूजयदिद्वदव
 ता॥ प्रवर्गदधधर्मनाउ, गदधनाथस्यपूजन॥ विजयसुरवन्नून

सत्यं सत्यं ब्रह्मा मद्। प्रियुर्नरुर्नुकामेन, पूजितः शूलयादिना॥ नः
 कदधपूजितः पूर्व, गदधविशुवधनृय। अन्वययन्यारुर्लीन, पू
 जितः शूलयापूना॥ नलस्यान्वयनार्थाय, दमयन्यापूनाच्चितः
 नामवन्द्यनगदध, सीतामानयतापूना॥ जानकिद्वद्वकामेन, पू
 जितः शूलनूमता। रुगीनधनगदध, रंगमानयतापूना॥ अमनी
 स्यादनाथाय, गदधदवासूनेनयि। यथापूर्वकुदेखन, दत्तात्रयिनि

नन्दनः॥ आनाधितामयागद, इकिन्नासहिगनच। अमर्तहृनता
 पूर्व, वेनतयद्यदि॥ आनाधितागदधका, र्हिगनामर्तव
 लान्। कुरुवाधियुगनायि, मधनानाधितः पूना॥ अयकामसु
 थल्लहि, समानाधयमर्कनि॥ द्राप्यसिखसकंनार्क, रुत्वागर्क २४
 प्रथमजिन। सिद्धानि सर्वकार्यादि, नाप्रकार्याविवातध॥ चव
 मूरुसुसुधून, मानूजः याधूनन्दनः॥ पूजयामासदवस्य, पूर्यधि

अथ प्रारम्भः

ANANDHINGS

1.170